

---

.. shrii shaaradaa giitam ..

॥ श्री शारदा गीतम् ॥

---

कल्याणानि तनोतु काऽपि तरुणी शृङ्गाद्रिभूषायिता  
श्रीमच्छङ्करदेशिकेन्द्रकलितं चक्रं सदाधिष्ठिता ।  
दूरस्थामपि पादनम्रजनतां विद्यायुरारोग्य सत्  
सन्तत्यादिमनोरथाप्तिसहितां सन्तन्वती सत्वरम् ॥

शारदाम्ब शरदिन्दुनिभानन भासित निखिल दिगन्ते ।  
पारदे भवमहाजलराशेः पालय मां विधिकान्ते ॥

दन्तकान्तिजित कुन्दसुमे वरकुन्तल निर्धुतभृङ्गे ।  
शान्तचित्तजन सन्तत चिन्तित कोटिचन्द्रसदृशाङ्गे ॥

पादनम्रजन वाञ्छितपूरण निर्जित नन्दनवल्लिके ।  
मादनेश्वसन गर्व निवर्हण दक्ष मनोहर चिल्लिके ॥

ऋष्यशृङ्गपुर वासविलोले वश्ययन्त्र सदृशास्ये ।  
पञ्चदङ्घ्रि शुकदेवहूतिसुत कश्यपादि समुपास्ये ॥ ॐ ॥

॥ इति दक्षिणाम्नाय श्रिङ्गेरी श्रीशारदापीठाधिपति  
शङ्कराचार्य जगद्गुरुवर्यो श्री चन्द्रशेखर भारती  
महास्वामिभिः विरचितम् श्री शारदा गीतम् सम्पूर्णम् ॥

---

Encoded by R. Harshananda harshanand\_16@rediffmail.com

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)  
Last updated August 18, 2002